युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

यह वह महत्त्वपूर्ण समय है, जब मनुष्य और मनुष्यता पर गहराते विनाशकारी प्रवाहों-संकटों को निरस्त करके, विश्व के लिए उज्जवल भविष्य की देवी योजना को क्रियान्वित किया जाना है। वह क्रम शुरू भी हो गया है।

सैकड़ों वर्ष पहले से ही मान्य भविष्य द्रष्टाओं ने इरा संदर्भ में स्पष्ट संकेत देने प्रारंभ कर दिए थे, उनमें से कुछ उल्लेखनीय संदर्भ प्रस्तुत :-

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

संत सूरदास -

अरे मन! धीरज काहे न घरे ।

संवत दो सहस्त्र सो ऊपर ऐसो योग परे ।

सहस्त्र वर्ष लगि सतयुग बीते-धर्म की वेल बढ़े।

अरे मन ! धीरज काहे न घरै।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **नोस्ट्राडेमस** - फ्रांस के मान्य भविष्य वक्ता के अनुसार विनाश की तमाम आशंकाओं के वावजूद धरती पर स्वर्ग जैसी सुख-शांति की परिस्थितियाँ वाला श्रेष्ठ युग आना अवश्यंभावी है।

- **महात्मा वहाउल्ला** - इस पृथ्वी के मनुष्य और अन्य जीव? सृष्टि के लिए निर्धारित समय आ गया है। उसकी प्रतिच्छाया और गरिमा देखो, वही है प्राचीन गरिमा अपने नये रूप में।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

स्वामी विवेकानन्द - भारत उत्कर्ष के उस शिखर तक पहुँचेगा, जिसके सामने प्राचीन गौरव के कीर्तिमान छोटे पड़ जायेंगे।

योगी श्री अरविन्द- भारत को विश्व का आध्यात्मिक मार्गदर्शन- नेतृत्व करना ही है। अतिमानस का अवतरण जनमानस में होगा और वातावरण तेजी से बदलेगा।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

स्पष्ट उद्घोष- इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य

जिस समय वैज्ञानिक, समाजशास्त्री आदि बढ़ते प्रदूषण, बढ़ती जनसंख्या एवं बढ़ते अपराधों के कारण मनुष्य और मनुष्यता के अस्तित्व पर भयानक संकट की संभावनाओं से चिन्तित थे, तब उन्होंने यह उद्घोष किया कि परिस्थितियाँ वास्तव में अत्यधिक भयावह हैं, किन्तु अभी स्रष्टा को विनाश मंजूर नहीं है, इसलिए दैवी एवं मानवीय पुरुषार्थ के संयोग से परिस्थितियाँ तेजी से बदलेंगी। दो हजार साल में जो परिस्थितियाँ बिगड़ी हैं, उनका सुधार सौ साल में हो जायेगा। सूक्ष्म जगत् में वह व्यवस्था बन चुकी है। सुपात्रों के माध्यम से उसका अवतरण भर होना है। इस हेतु उन्होंने युग निर्माण योजना प्रस्तुत की।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

इस अभियान का लक्ष्य है- 'मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण'। धरती पर स्वर्ग की कामना सभी करते हैं; परन्तु ऋषि का कथन है कि स्वर्ग का अवतरण विकास और निर्वाह देवत्व के आधार पर ही सम्भव है। हर व्यक्ति में देवत्व बीजरूप में है। जितने अंशों में वह जाग्रत् एवं विकसित होता जायेगा- उसी अनुसार स्वर्गीय परिस्थितियों का अवतरण होता रहेगा। हर व्यक्ति इस दिशा में जाग्रत् एवं प्रयत्नशील रहे।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

सुनिश्चित सूत्र - स्पष्ट घोषणा के साथ ही उन्होंने युग परिवर्तन के सुनिश्चित एवं सार्वभौम स्तर पर व्यावहारिक सूत्र भी प्रस्तुत किए।

तीन क्रान्तियाँ -

विचार क्रान्ति - विचारों और जीवन की परिभाषाओं को आदर्शनिष्ठ विवेक संगत बनाना।

नैतिक क्रान्ति - आदर्शों-विवेक के अनुरूप जीवन जीने का अदम्य नैतिक बल जाग्रत् करना।

सामाजिक क्रान्ति - समाज में व्याप्त अवांछनीयताओं का उन्मूलन करके सत्प्रवृत्तियों की स्थापना करना।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

तीन निर्माण -

1. **व्यक्ति निर्माण -** श्रेष्ठ चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहारनिष्ठ व्यक्तित्व वनाना।
2. **परिवार निर्माण -** श्रेष्ठ संस्कारों से सम्पन्न प्यार और सहकार भरे परिवार और कार्य समूह बनाना।
3. **समाज निर्माण-** श्रेष्ठ व्यक्तियों एवं परिवारों के माध्यम से आदर्श सामाजिक व्यवस्था बनाना।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

तीन गतिविधियाँ -

1. **प्रचारात्मक** - युग-निर्माण के सूत्रों से जन-जन को परिचित और सहमत बनाना।

2. **रचनात्मक-** सहमत व्यक्तियों को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करके विभिन्न सृजनात्मक कार्यों में लगाना।

3. **संघर्षात्मक** - सृजन कार्यों में आने वाली बाधाओं को साहसपूर्वक निरस्त करते हुए आगे बढ़ना।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

नये युग की आधारशिला - युग निर्माण सत्संकल्प

ऋषियों ने बतलाया है कि ईश्वर ने यह सृष्टि अपने संकल्प से पैदा की है। मनुष्य में भी अपने संकल्प से सृजन करने की क्षमता है। हर व्यक्ति नव निर्माण के लिए श्रेष्ठ संकल्प करे और अपने जीवन को तदनुसार ढालने के प्रयास करे, तो उसे इस ईश्वरीय योजना में अग्रदूतों की भूमिका निभाने का अनुपम श्रेय सौभाग्य प्राप्त हो सकता है। युगऋषि ने सूक्ष्मसत्ता के साथ विचार मन्थन करके युग निर्माण सत्संकल्प के 18 सूत्रों को विकसित किया है, जो सार्वभौम और सर्वोपयोगी हैं।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

युगशक्ति का स्वरूप - लाल मशाल

उन्होंने युग निर्माण सत्संकल्प के सार्वभौम सूत्रों के साथ युगशक्ति का ऐसा सार्वभौम प्रतीकात्मक स्वरूप भी दिया, जिसे हर क्षेत्र में, हर वर्ग, हर संगठन में जाग्रत् किया जा सकता है।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **अद्वितीय लेखक -** जिन्होंने हजारों पुस्तकें लिखकर व्यक्ति, परिवार एवं समाज के लौकिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया।

- **स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी-** जिन्होंने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रूप में प्रख्यात हुए।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **संस्कृति पुरुष -** जिन्होंने लुप्तप्राय संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया।

- **जगत् गुरु -** जिन्होंने अज्ञान के गहन अंधकार में भटकती मनुष्यता को धर्म-पंथ-सम्प्रदाय आदि वर्ग भेदों से ऊपर उठा कर जीवन लक्ष्य सुझाया। करोड़ों लोगों को आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर कराया।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **तपस्वी** - जिन्होंने कठोर तप साधना से अर्जित शक्ति द्वारा लाखों को पीड़ा पतन से उबारा तथा कई अवसरों पर प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया। गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण सम्पन्न किए।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **दार्शनिक** - जिन्होंने दर्शन की भूल-भूलैया और रहस्यवाद से जन-जन को उबारा और जीवन में स्वयं जी कर सुगम रूप में प्रस्तुत किया। विचारक - जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को 'अखण्ड ज्योति' की प्रखर विचार शैली प्रदान की।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **आध्यात्मिक पुरुष** - जिन्होंने अध्यात्म को जीवन जीने की कला के रूप में प्रस्तुत किया।

- **नवयुग के शिल्पकार** - जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी।

- **वैज्ञानिक ऋषि** - जिन्होंने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, परस्पर पूरक हैं"।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **युग के आचार्य** - जिन्होंने अपने आचरण से शिक्षण की आर्ष परम्परा को पुनर्जीवत किया। हर परिवार को जीवन की पाठशाला बनाने के सूत्र दिए। पुनः प्राचीन ऋषिकुल-गुरुकुल की पावन परम्परा को जीवित करने हेतु शांतिकुंज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय जैसे महान आलोक केन्द्रों को स्थापित किया।

- **महा क्रान्ति के प्रणेता-** जिन्होंने बौद्धिक क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति एवं सामाजिक क्रान्ति के माध्यम से विश्वव्यापी महाक्रान्ति का सूत्रपात किया।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **युग द्रष्टा** - जिन्होंने "२१ वीं सदी उज्ज्वल भविष्य" का नारा दिया तथा युगविभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नव सृजन - नए युग के आगमन का संदेश दिया।

- **धार्मिक उद्धारक** - जिन्होंने गायत्री और यज्ञ को रूढ़ियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सत्कर्म जागरण का माध्यम बनाया।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **संगठक** - जिन्होंने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोड़ों लोगों को आत्मीयता के सूत्र में बाँधकर विश्वव्यापी 'युग निर्माण परिवार' 'गायत्री परिवार' का गठन किया।

- **समाज सुधारक** - जिन्होंने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परम्परागत रूढ़ियों की समाप्ति हेतु अद्भुत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरूप समाज में प्रस्तुत किया।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **ब्राह्मण -** जिन्होंने प्राचीन ब्राह्मण परम्परा का सच्चा स्वरूप समाज के सामने रखा एवं ब्राह्मणोचित औसत भारतीय जीवन स्तर अपना कर अपना सम्पूर्ण समय, श्रम, मनोयोग एवं प्रतिभा समाज हित में नियोजित कर अनेकों को इस मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित किया।
  पिता - जिन्होंनें करोड़ों व्यक्तियों को अपनी छाती से लगाया और जिनकी छाती से लगकर लाखों व्यक्तियों ने उनके अन्तस् के दर्द को अनुभव कर अपना जीवन महान कार्यों हेतु समर्पित किया।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

- **सिद्ध पुरुष** - जिन्होंने कठोर तपस्या कर अपने को तपाया तथा पारस बनकर औरों को स्पर्श कर महान बना दिया।
- **पथ प्रदर्शक** - जिन्होंने लाखों को नैतिक और आध्यात्मिक जीवन पथ पर अग्रसर किया।
- **अवतारी चेतना** - जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोड़ों व्यक्ति उस ओर चल पड़े।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

खुला आमन्त्रण

युगऋषि ने युग निर्माण के प्रति जागरूकता लाने तथा पृष्ठभूमि बनाने के लिए युग निर्माण परिवार- गायत्री परिवार के नाम से एक संगठन भी बनाया है, जो विराट् रूप लेता चला जा रहा है, किन्तु उन्होंने हर सदाशयता सम्पन्न व्यक्ति एवं संगठन को ईश्वर के साथ भागीदारी के लिए खुला आमन्त्रण दिया है। यह आश्वासन दिया है, जो भी व्यक्ति एवं संगठन युग निर्माण के उद्देश्यों के लिए, प्रयास- पुरुषार्थ-सहयोग करेंगे, उन्हें ऋषिसत्ता के मार्गदर्शन-संरक्षण एवं दैवी अनुदानों का लाभ सहज स्वाभाविक रूप से मिलता रहेगा। भागीदारी के सूत्र- अपनी दिनचर्या में इन्हें शामिल करें।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

1. **<u>उपासना -</u>** प्रतिदिन न्यूनतम 20 मिनट ईश्वर के लिए खाली होकर बैठें। सबके लिए सद्बुद्धि सबके लिए उज्ज्वल भविष्य की भावना के साथ गायत्री मन्त्र / इष्ट मन्त्र / नाम का जप करें।
2. **<u>साधना-</u>** स्वाध्याय एवं संयम के माध्यम से अपने अन्दर दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन तथा सत्प्रवृत्तियों के समर्थन का अभ्यास करें।
3. **<u>आराधना -</u>** व्यवस्थित दिनचर्या के परिणाम स्वरूप बचे हुए समय एवं क्षमताओं को सेवा कार्यों में लगाएँ। इस हेतु प्रतिदिन कम से कम 1 घण्टे का समय एवं आधा कप चाय अथवा आधी रोटी के मूल्य की राशि अंश दान करें।

युगऋषि और युग निर्माण योजना दिव्य योजना के स्वर्णिम संकेत

हम बदलेंगे - युग बदलेगा, हम सुधरेंगे - युग सुधरेगा